32

बचपन

छोड़ बचपन का वो आँगन मैं, जवानी की दहलीज पर आया
पीछे मुड़ के देखा तो अहसास हुआ क्या-क्या छोड़ आया
छोड़ आया मैं वो स्वर्ग सा सुख जो माँ की गोद में था पाया

छोड़ आया वो मखमली आँचल जिसने मुश्किलों की हर धूप से बचाया
छोड़ आया वो नर्म कोमल हाथ जिन्होंने मेरे वजूद को वज्र बनाया

छोड़ आया माँ की वो मधुर लोरियाँ जिन्होंने दर्द में भी मुझे गहरी नींद सुलाया
छोड़ आया माँ के हाथ का वो लजीज खाना जो स्वाद दुनिया के किसी महंगे होटल में ना आया

छोड़ आया मैं वो कांधे जिन्होंने मेरे बचपन को झुलाया
बनाने को मेरी हस्ती जिन कांधों ने अपनी जवानी को लुटाया

छोड़ आया वो भोली जिदें जिन्हे पिता ने नाजों से था उठाया
भूल कर अपना हर सुख मेरी हसरतों को ही अपनी हसरतें बनाया

छोड़ आया पिता की वो डांट जिन्होंने जीवन की सही डगर पर चलाया
छोड़ आया वो खालिस रिश्ते नहीं थी जिनमे कोई बनावटी माया

छोड़ आया जिंदा खुशियों का वो दौर जीवन था जिन से जगमगाया
छोड़ आया बचपन के खेल,मिट्टी के खिलौने और वो जो रेत का घरौंदा था बनाया

था जो स्वाद बचपन में वो जवानी में नहीं जवान होकर ये समझ आया
लाख कोशिशों के बाद भी 'पवन' बचपन की गोद में ना दोबारा जा पाया।

पवन कुमार
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जम्मू छावनी